मुसलमानों के तमाम मसाएल का हल... इत्तेहाद बैनुलमुस्लिमीन

जनाब शकील हसन शमसी साहब "राष्ट्रीय सहारा" उर्दू, दिल्ली

इख़्तेलाफ़ इन्सान की फ़ितरत में शामिल है और इख़्तेलाफ़ करने की इस रविश ने हमेशा तरक़्क़ी के दरवाज़े खोले हैं। दो इन्सानों के दरमियान किसी बात पर इख़्तेलाफ़ होने से ही हमेशा तहक़ीक़ के नये दरवाज़े खुलते हैं। समाजियात के एक्सपर्टस हों या उलूमे दीन के माहिरीन, साईंसदाँ हज़रात हों या तिब व जराहत के मैदान में अपना सिक्का जमाने वाले डॉक्टर, बलन्द पाया हाज़िक़ हों या बड़े-बड़े नब्बाज़ तबीब सब एक दूसरे से इख़्तेलाफ़ करने का हक़ रखते हैं और अपनी-अपनी अक़्ल के मुताबिक़ इन्सानों की फ़लाह व बहबूद में हिस्सा लेते हैं, लेकिन जब-जब इख़्तेलाफ़ात निफ़ाक़ में बदलते हैं तो इन्सानों का जीना दुश्वार हो जाता है और तरक़्क़ी के बजाए तनज़्ज़ुली का दौर शुरु हो जाता है। दीने इस्लाम ने चूँकि इन्सानों को मज़हब के मामले में अक़्ल का इस्तेमाल करने की इजाज़त दी थी, इसलिए उलमा ने अपनी अक़्ल का इस्तेमाल किया और क़ुरआने पाक और अहादीसे पैग़म्बर[स०] की तफ़सीर करते वक़्त अपने इल्म, अपनी फ़हम, अपनी ज़बानदानी, अपने शऊर, अपनी अक़्ल और अपने इदराक का सहारा लिया, इसीलिए मुसलमानों के फ़िरक़े बनते चले गये। सिर्फ़ मुसलमानों के बारे में क्यों कहा जाए? दुनिया का कौन सा ऐसा मज़हब है जिसमें इख़्तेलाफ़ न हुआ हो और फ़िरक़े न बने हों? फ़र्क़ सिर्फ इतना था कि इन फ़िरक़ों के इख़्तेलाफ़ात को हवा देने वाले नहीं थे, क्योंकि उनसे ख़तरा कम था, लेकिन चूँकि इस्लाम का पैग़ाम आसानी से दिल में उतर जाता है, इसलिए इसके पैग़ाम को आगे बढ़ने से रोकने की साज़िशें आँहुज़ूर की ज़ाहिरी हयात तमाम हो जाने के कुछ ही बरसों बाद शुरु हो गई थी और अभी भी जारी हैं, लेकिन ख़ुशी की बात ये है कि मुसलमानों को मुत्तहेद रखने वाली ताक़तें भी हर दौर में सरगर्म रही हैं और ख़ुदा का शुक्र है कि वह आज भी इस सिलसिले में हर मुमकिन इक़दामात करने में मसरूफ़ हैं। जब-जब मुसलमानों में इख़्तेलाफ़ के बीज बोने की कोशिश होती है, अल्लाह उन फ़सलों को जलाकर ख़ाक कर देने वालेएक गिरोह का इन्तिज़ाम भी कर देता है।

इत्तेहादे मिल्लत की बात करने वाले तमाम मुसलमानों के लिए ये निहायत ख़ुशी की बात है कि दुनिया की अहम तरीन इस्लामी युनिवर्सिटी 'जामिअतुल अज़हर' के नये सरबराह शैख़ अहमद अल-तय्यब ने 'जामिअतुल अज़हर' (युनिवर्सिटी) के सरबराह का ओहदा संभालते ही अपनी पहली तक़रीर में इस अज़्म का इज़हार किया कि वह शिया और सुन्नी उलमा को क़रीब लाने की हर मुमकिन कोशिश करेंगे, यानी अब 'जामिअतुल अज़हर' के बैनर के नीचे इत्तेहादे इस्लामी की तहरीक चलेगी, जो वक़्त की सबसे बड़ी ज़रूरत है। आज जब मुसलमानों को मसलक और फ़िरक़े के नाम पर लड़वाने के लिए आलमी पैमाने की साज़िशें हो रही हैं, ऐसे आलम में शैख़ अहमद अल-तय्यब का ये बयान एक ख़ुशगवार झोंके की तरह इस्लामी मुमालिक की सरहदों में दाख़िल हुआ है। उम्मीद है कि शैख़ अहमद अल-तय्यब की ये पहल मुसलमानों में इख़्तेलाफ़ात के बीज डालने वालों के नापाक अज़ाएम को नाकाम करने में अहम किरदार अदा करेगी।

इसके अलावा एक ख़ुशआइन्द ख़बर लीबिया के शहर सरते से भी आई है, जहाँ अरब लीग के सालाना इजलास में उसके सेक्रेट्री जनरल अम्र मूसा ने ये बात कहकर अमरीका और इस्राईल के सियासी गलियारों में खलबली मचा दी कि इस्राईल की हरकतों के पेशे नज़र अरबों की ईरान से बातचीत ज़रूरी है। एक अहम बात ये रही कि इस इजलास में तुर्की जैसे मुस्लिम मुल्क के वज़ीरे आज़म तय्यब उर्दगान ने भी कर्नल क़ज़ाफ़ी के खुसूसी मेहमान की हैसियत से शिरकत की (ख़याल रहे कि तुर्की ने कमाल अतातुर्क के दौरे इक़्तेदार में खुद को इस्लामी मुमालिक की बिरादरी से बिलकुल अलग-थलग कर लिया था और मुसलमानों की मज़हबी आज़ादी सल्ब कर ली गई थी। हिजाब पर पाबन्दी आयद कर दी गई थी और तुर्की ज़बान का रस्मुलख़त बदल कर रोमन कर दिया गया था।) उर्दगान के अरब लीग के इजलास में मौजूदगी मुस्तक़बिल में मुस्लिम मुमालिक के इत्तेहाद के लिए बहुत अहम कड़ी साबित होगी। अरब लीग के इजलास में फिलिस्तीनी इन्तिज़ामिया के सदर महमूद अब्बास ने भी इस्राईल के ख़िलाफ़ सख़्त लहजे का इस्तेमाल किया क्योंकि माज़ी में उन्होंने फिलिस्तीनियों की नाराज़गी के बावजूद इस्राईल की तरफ़ दोस्ती का हाथ बढ़ाया था। ये और बात है कि इस्राईल ने उनके हाथों से गुलाब का फूल लेकर उनके तमाम जिस्म पर काँटे पेवस्त कर दिये। इस्राईल से वफ़ा की उम्मीद में महमूद अब्बास ख़ुद अपनी क़ौम से बेवफ़ाई पर मजबूर हुए, लेकिन अब ऐसा लगता है कि वह भी धोका खाने के बाद होश में आते जा रहे हैं। ख़ुदा करे इस्राईल का अन्दर ही अन्दर से साथ देने वाले दूसरे मुसलमान भी इस हक़ीक़त को समझ जाएं कि सहयूनियों का सिर्फ इतना ही इरादा नहीं है कि वह मौजूदा सरहदों में रहें, बल्कि उन्होंने अपनी मौजूदा सरहदों से लेकर दरियाए नील तक फैले हुए ग्रेटर इस्राईल का ख़्वाब देखा है और इस ख़्वाब को पूरा करने के लिए दुनिया भर के मुसलमान मुत्तहिद नहीं होंगे तो फिर उनके ख़िलाफ़ आवाज़ उठाने वाला भी नहीं होगा। इसीलिए अगर इस्राईल से कई हज़ार मील दूर वाक़े हिन्दुस्तान की सरहदों में भी कोई क़रारदाद इस्राईल के ख़िलाफ़ पास होती है तो इस्राईल के एजेन्ट परेशान हो जाते हैं और उसके सद्दे बाब के लिए मुसलमानों के दरमियान कोई फितना पैदा करने की कोशिश करते हैं।

इसी वजह से आल इण्डिया पर्सनल लॉ बोर्ड ने इस्राईल के ख़िलाफ़ तजवीज़ क्या पास कर दी कि एक छोटा सा गिरोह चिराग़पा हो गया। इसी के साथ नदवतुल उलमा को भी निशाना बनाया जाने लगा, जहाँ मुस्लिम पर्सनल लॉ बोर्ड का इजलास हुआ था, जिन सहाफ़ियों ने मुस्लिम पर्सनल लॉ बोर्ड का साथ दिया, उनकी किरदार कशी की मुहिम चलाने की नाकाम कोशिश भी की गई। अल्लाह का शुक्र है कि लखनऊ का इजलास हर माने में बहुत कामयाब रहा। सिर्फ़ इजलास ही नहीं ऐशबाग़ की ईदगाह में जो शानदार इख़्तेतामी तक़रीब हुई, उसमें मुसलमानों का ज़बरदस्त हुजूम और शिया-सुन्नी उलमा की एक ही स्टेज पर मौजूदगी इस बात की ग़म्माज़ थी कि मुसलमान अपने मसलकी इख़्तेलाफ़ात को निफ़ाक़ में बदलने वालों की हर नापाक कोशिश को नाकाम करेंगे।

ये बात भी क़ाबिले ज़िक्र है कि लखनऊ की एक रज़ाकार तनज़ीम की जानिब से मुल्क के अलग-अलग शहरों में इत्तेहादे मिल्लत कन्वेंशन भी किये जा रहे हैं। मुम्बई में और लखनऊ के कन्वेंशन की कामयाबी के बाद अगले इजलास की तैयारियों के सिलसिले में 11 मार्च को नदवतुल उलमा में एक मीटिंग भी हुई थी। इत्तेहादे मिल्लत के दुश्मनों को शायद ये बात भी नागवार गुज़री और उन्होंने नदवतुल उलमा को निशाना बनाया। यहाँ पर ये कहना ज़रूरी है कि मैं अपने इसी कालम में कई बार लिख चुका हूँ कि मुसलमानों के तमाम फ़िरक़ों को एक दूसरे के ख़िलाफ़ किताबें तहरीर करने और दिल आज़ार व इश्तेआल अंगेज़ तक़रीरें करने से गुरेज़ करना चाहिए। अगर कोई गिरोह इस मुहिम को आगे बढ़ाता है तो उसका ख़ैर मक़दम किया जाना चाहिए, लेकिन इस गिरोह को ये काम पहले अपने फ़िरक़े के अन्दर शुरु करना पड़ेगा। अपने फ़िरक़े के मदरसों में पढ़ाई जाने वाली ऐसी किताबों को कोर्स से

हटाना पड़ेगा, जो आपस में इज़्तेराब पैदा करती हों। इसी तरह उन मुफ़सिद ज़ाकिरों और ख़तीबों के ख़िलाफ़ भी मुहिम चलानी होगी, जो मुसलमानों के दरमियान नफ़रतों का ज़हर घोलने के लिए मिंबरे रसूल[स०] का बेजा इस्तेमाल करते हैं। ज़माने की इस्लाह से पहले अपने घर का सुधारना ज़रूरी है।

इसमें कोई शक नहीं कि मैं भी इसी लखनऊ में पला बढ़ा हूँ, जहाँ 115 साल से शिया-सुन्नी फ़िरक़े के लोग लड़ते आए थे और वहाँ का ज़हरीला माहौल ऐसा था कि शिया और सुन्नी महल्ले अलग-अलग आबाद हो गये। हालात ऐसे थे कि सुन्नी अक्सरियत वाले महल्लों से शिया गुज़रते हुए डरते थे और शियों के महल्लों में सुन्नियों का जाना मुश्किल था। अल्लाह का शुक्र है कि अब लखनऊ में पहले जैसे हालात नहीं। वहाँ शियों और सुन्नियों ने समझ लिया है कि हम इख़्तेलाफ़ात के बावजूद एक साथ ज़िन्दगी गुज़ार सकते हैं। हरचन्द निफ़ाक़ डालने वाली ताक़तें अब भी सरगर्म हैं। इन ताक़तों की निशानदही करने के लिए मैंने 1997[ई०] में ''शिया-सुन्नी क़ज़िया, कितना मज़हबी कितना सियासी'' के उनवान से एक किताब लिखी थी और उस किताब की इतनी पज़ीराई हुई कि उसके चार एडिशन हाथों हाथ फ़रोख़्त हो गये। मैंने उस किताब में बताया था कि आज़ादी से क़ब्ल किस तरह अंग्रेज़ों ने शिया-सुन्नी तफ़रक़े को हवा दी और आज़ादी के बाद जनसंघ का क्या रोल रहा... लखनऊ जैसे छोटे शहर में इस्राईल की क्या दिलचस्पी हो सकती है, इसका तफ़सीली तज़किरा मैं उस सह्यूनियत शिकन सफ़रनामे में कर चुका हूँ, जो मैंने फिलस्तीन के दौरे से वापसी पर लिखा था और जिसको ''रोज़नामा राष्ट्रीय सहारा'' के लाखों क़ारेईन (पाठकों) ने दिलचस्पी के साथ पढ़ा था।(1) मुझे फ़ख़्र है कि मैं एक ऐसे अख़बार से वाबस्ता हूँ, जो इलाक़ाई या मक़ामी हदों में क़ैद नहीं, बल्कि इसका दायरा शिमाली हिन्दुस्तान के कोहिस्तानी इलाक़ों से लेकर जुनूबी हिन्दुस्तान के साहिलों तक और ख़लीजे बंगाल से लेकर बह्रे अरब के कनारों तक फैला हुआ है, वेब एडिशन की मारफ़त ''रोज़नामा राष्ट्रीय सहारा'' की रसाई दुनिया के हर कोने तक हो गई है।

(बशुक्रिया रोज़नामा राष्ट्रीय सहारा 'उर्दू' 31 मार्च 2010[ई०])

(1) ये सफ़रनामा हिन्दी और उर्दू दोनों भाषाओं में नूरे हिदायत फ़ाउण्डेशन, इमामबाड़ा ग़ुफ़रानमाब लखनऊ से किताबी सूरत में प्रकाशित हो चुका है। शायक़ीन हज़रात इदारे से राब्ता क़ायम करें।

बक़िया....... इस्लाम में पर्दे का तसव्वुर

मुलाहेज़ा फ़रमाइये कि सिर्फ़ जिस्म ही नहीं बल्कि जो चीज़ें जिस्म की ज़ीनत हैं, उनके वास्ते भी मुमानेअत है कि किसी ग़ैर मर्द के सामने ज़ाहिर न करें। आयत में पूरी तफ़सील है जो क़ुरआन मजीद में देखी जा सकती है। मगर आयत की ज़बान यहाँ भी नहीं रुकती है बल्कि इरशाद होता है: ''और रास्ता चलते में अपने पैर ज़मीन पर मार कर न चलें (कि जो ज़ीनतें उनकी छुपी हुई हैं उनका पता चल जाए)''। ये है ग़ैरते इलाहिया और ये है इन्तिहाई तालीमे हिजाब कि अगर औरत ज़ेवर पहने हुए हो तो वह ज़ेवर मर्दों को दिखाना कैसा, इस ज़ेवर की आवाज़ भी न सुनाई दे। जिस ख़ालिक़ को ये गवारा नहीं कि औरत के ज़ेवर की आवाज़ मर्द सुनें, वह कब गवारा करेगा कि ज़ेवर दिखाये जाएं और जब ज़ेवर का बेपर्दा होना गवारा नहीं, तो वह कब गवारा करेगा कि वह हाथ पैर दिखाये जाएं जिनमें ज़ेवर हैं और जो हाथों और पैरों का ज़ाहिर होना जायज़ न रखे तो वह इसकी कब इजाज़त देगा कि मुँह दिखाये जाएं। इस आयत के बाद अब ज़रूरत तो नहीं है कि कोई और आयत पेश की जाए। साहेबाने ईमान और इन्साफ़ के लिए इस आयत ही में वह ज़बरदस्त ज़ख़ीरा मौजूद है जो पर्दे की अज़मत को रोज़े रौशन और आफ़ताबे निस्फ़ुन्नहार की तरह अयाँ कर देता है मगर मसअले की अहमियत को देखते हुए इन्शाअल्लाह अगले हिस्सों में मज़ीद अक़्ली और नक़ली दलाएल पेश होंगे। वमा अलैइना इल्लल बलाग।

(बशुक्रिया राष्ट्रीय सहारा (उर्दू) 26 फ़रवरी 2010[ई०])